Shri Basappa: If a fresh appeal is issued by the present Prime Minister, I am sure the womenfolk of India will respond at once to the Government's call . . . (*Interruption*).

Mr. Speaker: Order, order. That is another question.

Shri Basappa: May I know whether any appeal has been made?

Mr. Speaker: Order, order.

श्री काशीराम गुप्त : क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि राजस्थान और मध्य प्रदेश सरकार ने पाकिस्तान के हमले के बाद सुरक्षा कोष के लिए धन इकट्ठा करने के काम में सरकारी मशीनरी को, विशेष कर बिक्री टैक्स के अफ़सरों को, लगाया, जिससे जनता को बड़ी भारी कठिनाई हुई और गांवों के लोगों को भी तंग किया गया ?

प्रधान मंत्री तथा अणु शक्ति मंत्री (श्रीमती इन्दिरा गांधी): हमने तो बार-बार सभी प्रदेशों को यह इत्तिला भेजी है कि इस बारे में कोई जबर्दस्ती न की जाये ।

श्री काशी राम गुप्त : अध्यक्ष महोदय, मेरा प्रश्न यह था कि क्या सरकार को इस बात की जानकारी है कि मध्य प्रदेश और राजस्थान की सरकारों ने सुरक्षा कोष के लिए धन इकट्ठा करने के लिए बिक्री टैक्स अफ़सरों को लगाया है ।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : हमारे पास यह इत्तिला नहीं है ।

श्री गुलशन : क्या यह सच है कि चीन और पाकिस्तान के साथ संघर्ष के समय पंजाब राज्य ने रक्षा कोष में सभी राज्यों से ज्यादा धन इकट्ठा किया है और पाकिस्तान के साथ हुए संघर्ष में सबसे अधिक नुकसान पंजाब का हुआ है; यदि हां, तो क्या सरकार की तरफ़ से पंजाब सरकार को कोई पुरस्कार मिलेगा ?

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद : पंजाबी सूबा ।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : यह तो बिल्कुल दूसरा प्रश्न है ।

अध्यक्ष महोदय : नैक्स्ट क्वैश्चन—श्री मधु लिमये ।

श्री हुकम चन्द कछवाय : अध्यक्ष महोदय मेरा नाम भी इसमें है । मैं इस बारे में एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय : मैंने माननीय सदस्य को बुलाया था, लेकिन अगर वह हाउस में नहीं थे, तो मैं क्या कर सकता हूं ? क्या मैं उन को घर से बुलाता ?

Embargo on Arm Supplies to India

+

*655. **Shri Madhu Limaye:**
Shri Kishen Pattnayak:
Shri Narayan Reddy:
Shri Rameshwar Tantia:
Shri Himatsingka:
Shri Prakash Vir Shastri:
Shri Jagdev Singh Siddhanti:
Shri Hukam Chand Kachhavaiya:
Shri Daljit Singh:
Shri P. R. Chakraverti:
Shri Kindar Lal:
Shri Vishwa Nath Pandey:
Shri R. S. Pandey:
Shri R. Barua:
Shri Dharmalingam:
Shri P. C. Borooah:
Shri D. C. Sharma:
Shri Sidheswar Prasad:
Shri Linga Reddy:
Shri Hem Raj:
Shri Maurya:
Shri Ram Harkh Yadav:
Dr. Ram Manohar Lohia:
Shri Murli Manohar:
Shri Basumatari:

Will the Minister of **Defence** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 530 on the 29th November, 1965 and state:

(a) whether the Western Countries have removed the restrictions on the export of military hadware to India;

(b) whether the U.K. Government and other Governments have started issuing licences to export war material to India; and

(c) if so, whether any firm guarantees have been asked or given for uninterrupted supplies to India by these countries?

The Minister of State in the Ministry of Defence (Shri A. M. Thomas): (a) to (c). It is not in the public interest to give detailed information on the subject.

श्री मधु लिमये : क्या सरकार ने इन विदेशी ताकतों के साथ हथियारी सहायता के बारे में इस सवाल को लेकर बात की है कि हथियार देने के लिए क्या कसौटी होनी चाहिए—यानी अन्दरूनी विद्रोह के खिलाफ़ सरकार को बनाए रखने के लिए या अपने दोस्त देशों को, चाहे वे किसी भी मक़सद के लिए उनका इस्तेमाल करें, या नई दुनिया के निर्माण के लिए हथियारी सहायता देनी चाहिए ?

Shri A. M. Thomas: The matter has been taken up from time to time. This question has to be viewed from two standpoints. One is from the interests of our country and the other is from the viewpoint of the susceptibilities of the countries which give us these arms. From the viewpoint of our own country, the House would agree that the matter of flow of vital equipment and the sources also is not being given publicity. From the standpoint of the countries which give, they have got their own political difficulties and susceptibilities which we have to respect. At the same time, I may inform the House that the main sources of supply are UK and USA. As far as UK is concerned, recently we have got intimation that they have lifted the ban on supplies of military hardware. The USA Government have intimated that supplies of non-lethal equipment on cash and credit basis would be resumed on a selective basis.

श्री मधु लिमये : अध्यक्ष महोदय, मन्त्री महोदय शायद मेरे प्रश्न को समझे नहीं हैं। मैंने कोई गुप्त जानकारी नहीं मांगी है। अगर आप उनको समझा दें, तो वह जवाब दें।

अध्यक्ष महोदय : अगर मैं भी न समझा हूं ?

श्री मधु लिमये : अगर आप भी न समझे हों, तो मुझे इस प्रश्न को दोहराना पड़ेगा।

मैं यह जानना चाहता हूं कि जो विदेशी ताकत हथियारी सहायता देती हैं, क्या सरकार ने उनके साथ यह सहायता देने के बारे में क्या कसौटी हो इसकी बहस की है कि वे यह सहायता अन्दरूनी विद्रोह के खिलाफ़ दे रहे हैं, केवल अपने दोस्तों को दे रहे हैं या नई दुनिया के निर्माण के लिए दे रहे हैं।

Shri A. M. Thomas: We have informed the UK and USA Governments that the country which is aggressed against and the aggressor should not be put on the same par. We have brought this to the notice of the governments which are supplying arms. Apart from that, mainly our weapons are of UK origin and any stoppage of supplies of arms and parts from UK would have great consequences in our country. So, we have taken up this matter and as I said, UK Government have intimated that they have lifted the ban on supplies of military hardware.

श्री मधु लिमये : बुनियादी सिद्धान्तों को न अपनाने के कारण जो खराब नतीजे निकले हैं, क्या सरकार ने उनकी ओर इन विदेशी ताकतों का ध्यान दिलाया है—जैसे, इन्दोनेशिया को कम्युनिज्म की रक्षा के लिए हथियार दिये गए, लेकिन वे हथियार कम्युनिस्टों के खिलाफ़ इस्तेमाल किये गए और प्रजातन्त्र की रक्षा के लिए पाकिस्तान को हथियार दिये गए, लेकिन संसार के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देश के खिलाफ़ उन हथियारों का इस्तेमाल हुआ ? बुनियादी सिद्धान्तों के बारे

में सावधानी न बरतने के कारण क्या खराब नतीजे निकल रहे हैं, इसकी ओर इन ताकतों का ध्यान दिलाया गया है ?

Shri A. M. Thomas: I can very well understand the anxiety of the hon. Member. Of course, in a way, it reflects the feelings of the people in our country. We have certainly brought this aspect to the notice of the countries concerned.

श्री किशन पटनायक : यह ध्यान में रखते हुए कि भारत को तब लड़ाई करनी पड़ती है, जब कोई उस पर हमला करता है, लेकिन हमले के वक्त विदेशी मदद बन्द हो जाती है, क्या भारत सरकार कुछ देशों से ऐसा सम्पर्क बना रही है, जिससे हमले के मौके पर उनकी दोस्ती तटस्थ न रहे; यदि हां, तो वे देश कौन कौन से हैं ?

Shri A. M. Thomas: I would beg of the House to consider that in the present context it would be better to avoid any questions on this matter. We are having delicate talks and negotiations and, therefore, it is better to avoid such questions.

श्री किशन पटनायक : अध्यक्ष महोदय, क्या मिनिस्टर महोदय ने सही बात कही है ? इसमें अड़चन क्या है ?

अध्यक्ष महोदय : ठीक है । उनके लिए यह बताना मुश्किल होगा ।

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती: पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध के समय अमरीका, ब्रिटेन और दूसरे देशों के शस्त्रों की सहायता पर रोक लगा दी थी । मन्त्री महोदय कहते हैं कि ब्रिटेन ने वह रोक हटा ली है । मैं यह जानना चाहता हूं कि इस बारे में जो करार हुआ था, क्या यह रोक हटने पर उस करार के अनुसार सामान आ रहा है ।

Shri A. M. Thomas: There are several agreements. Without getting information on the particular agreement that the hon. Member has in view I would not be in a position to answer that question.

श्री हुकम चन्द कछवाय : जिस समय लड़ाई होती है, उस समय हमें अन्य देशों से हथियार मिलने बन्द हो जाते हैं । तो क्या सरकार इस बारे में आत्म-निर्भरता प्राप्त करने का प्रयत्न करेगी, ताकि ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होने पर हम अन्य देशों से हथियार न लें, बल्कि स्वयं अपने यहां बने हुए हथियारों का प्रयोग करें ? क्या सरकार इस बारे में विचार कर रही है ?

Shri A. M. Thomas: That has been our attempt, Sir, to be self-sufficient as far as possible, and the hon. House is aware of the new slogan we have kept in view of self-reliance.

Shri R. Barua: May I know whether the supply of military equipment is dependent on Indo-Pak amity?

Shri A. M. Thomas: The U.K. Government has informed that in view of the fact that both sides have withdrawn their forces to the 5th August line they are thinking of resuming the supplies of arms and ammunitions of the type which they were previously supplying.

Shri P. C. Borooah: During the last session the hon. Minister of Defence indicated, in answer to a question, that out of about 7 million sterling pounds worth of defence equipments ordered for and licensed for supply by the British Government, the supply was only goods worth about 5,00,000 sterling pounds. The hon. Minister just now said that the ban has been lifted. May I know by what time the supplies will be completed and what has been already supplied?

Shri A. M. Thomas: That question was answered by the hon. Minister of Supplies and Technical Development. He has given certain figures also. I do not know the latest position. The Ministry of Supplies may be addressed

in this matter. We have got only this general information and the details have to be worked out whether any lyicensing procedure would still remain etc. All these things have to be worked out.

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद: यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है कि पाकिस्तानी हमले के समय इंग्लैण्ड और अमरीका से हम को हथियारों की कोई मदद नहीं मिली। अब भी वे हथियारों और पुर्जों को देने में आनाकानी कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में हथियारों के मामले में आत्म-निर्भर होने की दृष्टि से क्या हमारे देश में कोई रिसर्च की जा रही है और इस सम्बन्ध में विदेशी मुद्रा की जो कठिनाई है, क्या सरकार उस को दूर करने के लिए आवश्यक कदम उठा रही है ?

Shri A. M. Thomas: I have already said that there has been a general relaxation in the rigidity of the stand that these countries were taking. We would certainly be attempting to achieve self-sufficiency to the extent possible and we are taking all steps that are necessary in that direction.

डा० राम मनोहर लोहिया : अध्यक्ष महोदय, मैं पहले से ही आप को बता दूं कि मेरा प्रश्न हथियारों के व्यापक बुनियादी पहलू के बारे में है—खाली भारत के बारे में नहीं है और आप मेरे इस सवाल का जवाब भी दिलवायें। मेरा सवाल यह है कि क्या कभी भारत सरकार ने हथियार देने वालों से इस व्यापक प्रश्न पर बातचीत की है कि हथियार कब और कैसे और किन किन को दिये जायें, क्योंकि साम्यवाद ने जो हथियार दुनिया के विभिन्न देशों को दिये, वहां पर उन हथियारों से खुद साम्यवाद का कत्ल किया गया। हिन्देनिया में ऐसा हुआ।

अध्यक्ष महोदय: यह सवाल पहले किया गया है।

डा० राम मनोहर लोहिया: लेकिन उस का जवाब नहीं दिया गया है।

अध्यक्ष महोदय : श्री मधु लिमये ने यह सवाल किया था।

डा० राम मनोहर लोहिया : लेकिन मन्त्री महोदय उसका जवाब नहीं दे रहे हैं। आप जवाब दिलवायें।

बुनियादी बात को आप सुन लीजिये। हिन्दुस्तान के सम्बन्ध में भी वही स्थिति हुई।

अध्यक्ष महोदय : बुनियादी बात सुन ली है। अब आप उनको जवाब देने दीजिये।

डा० राम मनोहर लोहिया : आप सुन लीजिये, शायद वह न समझें। क्या रूस और अमरीका इस बात पर विचार करेंगे कि दुनिया में प्राकृतिक और खास तौर से एशिया में प्राकृतिक तरक्की का जो प्रवाह है, उसको रोकने के लिये ये इस्तेमाल होते हैं या उसको बढ़ाने के लिये ?

अध्यक्ष महोदय : रूस और अमरीका विचार करेंगे या नहीं, इसका जवाब गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया दे ?

डा० राम मनोहर लोहिया: हम उनसे हथियार लेते हैं या नहीं और वे दूसरों को देते हैं।

अध्यक्ष महोदय : वह इस पर विचार करेंगे या नहीं, यह गवर्नमेंट आफ़ इण्डिया कैसे कह सकती है ?

डा० राम मनोहर लोहिया: क्यों नहीं कह सकती ? अध्यक्ष महोदय, आप इस तरह से इस बात को न टालिये ? जब दो देशों में बातचीत होती है...

अध्यक्ष महोदय: आप मेरे साथ बहस मे न पड़िये।

डा० राम मनोहर लोहिया : तब मैं किस से बहस करूंगा, आप मेहरबानी करके यह सवाल पुछवाइये।

Shri A. M. Thomas: In fact, Sir, I have . . .

Mr. Speaker: The simple question is this, whether we have ever discussed with these powers who give us these aid and arms, that this aid given to certain countries, which was intended for a particular purpose, has not been utilised for that purpose, rather that purpose has been frustrated and spoiled by their giving that aid and used by the country concerned for other purposes?

Shri A. M. Thomas: Yes, Sir, this matter has been answered by no less a person than the Prime Minister. We have already, on different occasions pointed out this aspect to the countries concerned.

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं फिर आपसे मदद चाहता हूं, इतना गलत जवाब दिया है । प्रधान मंत्री साहब को यह पता ही नहीं था कि वह दाम करते है इस तरह से ।

Shri A. M. Thomas: We have brought this to the notice of the countries concerned.

Shri Basumatari: May I know whether there is any condition attached with the supply of arms and ammunitions to India, or can we use it anywhere and wherever we like?

Shri A. M. Thomas: I have said that we have got the general information. I have also said that it would not be in the public interest to disclose any further details.

संयुक्त राज्य अमरीका सूचना सेवा का अधिकारी

+

***656. श्री द्वा० ना० तिवारी :**
डा० रानेन सेन :
श्री दीनेन भट्टाचार्य :
श्री सिद्धेश्वर प्रसाद :
श्री हुकम चन्द कछवाय :
श्री बड़े :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री सुबोध हंसदा :

क्या **वैदेशिक-कार्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि कलकत्ता में संयुक्त राज्य अमरीका सूचना सेवा के अधिकारी ने कुछ छात्रों का अपमान किया था जो दिसम्बर, 1965 के प्रथम सप्ताह में उसके द्वारा दी गई पार्टी में आमंत्रित किये गये थे ; और

(ख) यदि हां, तो क्या इस मामले में कोई कार्यवाही की गई है ?

The Minister of External Affairs (Shri Swaran Singh): (a) and (b). Sir, an Officer of the USIS in Calcutta had invited some students to a dinner party given by him at his house on 3rd December, 1965, in honour of the Attorney General of Wisconsin who was in Calcutta at the time. After the Chief Guest had spoken and answered questions, an Indian national serving with the USIS who had recently visited US, was asked by the host to give some experiences of his in the United States. This speech apparently was somewhat long and did not interest the students who started talking amongst themselves. As the speech was being disturbed the host asked the students concerned to keep quiet. When they continued talking, he aked them to leave the room. An unpleasant exchange of words followed.

The West Bengal Government investigated the matter and informed the Government of India of the details of the case. The Ministry of External Affairs then took up the matter with the American Embassy who assured the Ministry of External Affairs that they themselves were sorry at the unfortunate happenings.

Shri D. N. Tiwary: May I know whether this matter was ever taken up at diplomatic level and whether this